द्वितीयः पाठः

उद्भिज्ज-परिषद्

(वृक्षों की सभा)

[प्रस्तुत शीर्षक में लेखक ने मानव जाति पर सीधा प्रहार किया है। यहाँ वृक्षों की एक कल्पित सभा का वर्णन है। सभा के सभापति पद पर शोभित होते हुए पीपल अपने अध्यक्षीय भाषण में मानव-स्वभाव की कटु आलोचना करते हुए उसके दुर्गुणों का वर्णन करता है। वह कहता है कि मानव इतना स्वार्थी होता है कि अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए अपने सम्बन्धियों को भी मृत्यु के घाट उतार सकता है। वह कहता है कि जंगल में बड़े भयंकर हिंसक जानवर होते हैं, परन्तु वह हिंसा तभी करते हैं जब उनका पेट खाली होता है। पेट भरे होने पर वे कभी हिंसा नहीं करते, परन्तु मानव वह जीव है जिसका पेट कभी भरता ही नहीं। वह तो सदैव हिंसा पर उतारू रहता है। हम (वृक्ष) तो बहुत अच्छे हैं कि अपने द्वारा थके हुए को छाया और भूखे को फल देते हैं, परन्तु इस सृष्टि का सबसे निम्न कोटि का प्राणी मनुष्य है।]

अथ सर्वविधविटपिनां मध्ये स्थितः सुमहान् अश्वत्थदेवः वदति– भो भो वनस्पतिकुलप्रदीपा महापादपाः, कुसुमकोमलदन्तरुचः लताकुललालनाश्च। सावहिताः शृण्वन्तु भवन्तः। अद्य मानववार्तैव अस्माकं समालोच्यविषयः। सर्वासु सृष्टिधारासु निकृष्टतमा मानवा सृष्टिः, जीवसृष्टिप्रवाहेषु मानवा इव परप्रतारकाः, स्वार्थसाधनपरा, मायाविनः, कपटव्यवहारकुशला, हिंसानिरता जीवा न विद्यन्ते। भवन्तो नित्यमेवारण्यचारिणः सिंहव्याघ्रप्रमुखान् हिंस्रत्वभावनया प्रसिद्धान् श्वापदान् अवलोकयन्ति प्रत्यक्षम्। ततो भवन्त एव सानुनयं पृच्छ्यन्ते, कथयन्तु भवन्तो यथातथ्येन किमेते हिंसादिक्रियासु मनुष्येभ्यो भृशं गरिष्ठाः? श्वापदानां हिंसाकर्म जठरानलनिर्वाणमात्रप्रयोजनकम्। प्रशान्ते तु जठरानले, सकृद् उपजातायां स्वोदरपूर्तौ, न हि ते करतलगतानपि हरिणशशकादीन् उपघ्नन्ति। न वा तथाविधदुर्बलजीवघातार्थम् अटवीतोऽटवीं परिभ्रमन्ति।

मनुष्याणां हिंसावृत्तिस्तु निरवधिः निरवसाना च। यतोयत आत्मनोऽपकर्षः समाशङ्क्यते तत्र तत्रैव मानवानां हिंसावृत्तिः प्रवर्तते। स्वार्थसिद्धये मानवाः दारान्, मित्रं, प्रभुं, भृत्यं, स्वजनं, स्वपक्षं, चावलीलायै उपघ्नन्ति। पशुहत्या तु तेषामाक्रीडनं, केवलं चित्तविनोदाय महारण्यम् उपगम्य ते यथेच्छं निर्दयं च पशुघातं कुर्वन्ति। तेषां पशुप्रहारव्यापारम् आलोक्य जडानामपि अस्माकं विदीर्यते हृदयम्, अन्यच्च पशूनां भक्ष्यवस्तूनि प्रकृत्या नियमितान्येव। न हि पशवो भोजनव्यापारे प्रकृतिनियममुल्लङ्घयन्ति। तेषु ये मांसभुजः ते मांसमपहाय नान्यत् आकाङ्क्षन्ति। ये पुनः फलमूलाशिनस्ते तैरेव जीवन्ति। मानवानां न दृश्यते तादृशः कश्चिन्निर्दिष्टो नियमः।

स्वावस्थायां संतोषमलभमाना मनुजन्मानः प्रतिक्षणं स्वार्थसाधनाय सर्वात्मना प्रवर्तन्ते, न धर्ममनुधावन्ति, न सत्यमनुबध्नन्ति, तृणवदुपेक्षन्ते स्नेहम्, अहितमिव परित्यजन्ति आर्जवं, न किंञ्चिदपिलज्जन्ते अनृतव्यवहारात्, न स्वल्पमपि विभ्यति पापाचारेभ्यः, न हि क्षणमपि विरमन्ति परपीडनात्। यथा यथैव स्वार्थसिद्धिर्घटते परिवर्धते विषयपिपासा। निर्धनः शतं कामयते, शती दशशतान्यभिलषति, सहस्राधिपो लक्षमाकाङ्क्षति, इत्थं क्रमशः एव मनुष्याणामाशा वर्धते। विचार्यतां तावत्, ये खलु स्वप्नेऽपि तृप्तिसुखं नाधिगच्छन्ति, सर्वदैव नवनवाशाचित्तवृत्तयो भवन्ति, सम्भाव्यते तेषु कदाचिदपि स्वल्पमात्रं

शान्तिसुखम्? येषु क्षणमपि शान्तिसुखं नाविर्भवति ते खलु दु:खदु:खेनैव समयमतिवाहयन्ति इत्यपि किं वक्तव्यम्? कथं वा निजनिजावस्थायामेव तृप्तिमनुभवद्भ्य: पशुभ्यस्तेषां श्रेष्ठत्वम्? यद्धि विगर्हितं कर्म सम्पादयितुं पशवोऽपि लज्जन्ते तत्तु मानवानामीषत्करम्। नास्तीह किमपि अतिघोररूपं महापापकर्म यत्कामोपहतचित्तवृत्तिभि: मनुष्यै: नानुष्ठीयते। निपुणतरम् अवलोकयन्नपि अहं न तेषां पशुभ्य: कमपि उत्कर्षं परमतिनिकृष्टत्वमेव अवलोकयामि।

न केवलमेते पशुभ्यो निकृष्टास्तृणेभ्योऽपि निस्सारा एव। तृणानि खलु वात्यया सह स्वशक्तित: अभियुध्य वीरपुरुषा इव शक्तिक्षये क्षितितले पतन्ति, न तु कदाचित् कापुरुषा इव स्वस्थानम् अपहाय प्रपलायन्ते। मनुष्या: पुन: स्वचेतसाग्रत एव भविष्यत्काले संघटिष्यमाणं कमपि विपत्पातम् आकलय्य दु:खेन समयमतिवाहयन्ति, परिकल्पयन्ति च पर्याकुला बहुविधान् प्रतीकारोपायान्, येन मनुष्यजीवने शान्तिसुखं मनोरथपथादपि क्रान्तमेव। अथ ये तृणेभ्योऽप्यसारा: पशुभ्योऽपि निकृष्टतराश्च, तथा च तृणादि सृष्टेरनन्तरं तथाविधं जीवनिर्माणं विश्वविधातु: कीदृशं बुद्धिप्रकर्षं प्रकटयति।

इत्येवं हेतुप्रमाणपुरस्सरं सुचिरं बहुविधं विशदं च व्याख्याय सभापतिरश्वत्थदेव उद्भिज्ज-परिषदं विसर्जयामास।

काठिन्य निवारण

विटपिनां = वृक्षों के। **सावहिता:** = सावधान होकर। **मानववार्तैव** = मनुष्यों का व्यवहार। **परप्रतारका:** = दूसरों को ठगनेवाला। **अरण्यचारिण:** = वन में रहने वाले। **श्वापदान्** = पशुओं को। **गरिष्ठा:** = कठोर। **जठरानलनिर्वाणमात्र-प्रयोजनकम्** = केवल भूख मिटाना ही जिसका प्रयोजन है। **निरवधि:** = असीम। **निरवसाना** = अनन्त। **दारान्** = स्त्री को। **भृत्यं** = सेवक को। **विदीर्यते** = फट जाता है। **आकाङ्क्षन्ति** = इच्छा करते हैं। **अहितं** = शत्रु। **आर्जवम्** = सरलता को। **शती** = जिसके पास सौ हैं। **ईषत्करम्** = सरल कार्य है। **वात्यया** = तेज हवा से। **अभियुध्य** = युद्ध करके। **कापुरुषा:** = कायर पुरुष। **प्रपलायन्ते** = भाग जाते हैं। **आकलय्य** = सोचकर। **उद्भिज्ज:** = भूमि को फोड़कर उत्पन्न होने वाला (वृक्ष, लता आदि।)। **ईषत्** = थोड़ा। **संघटिष्यमाणं** = आगे घटित होनेवाला। **क्रान्त** = हट गया। **बहुविधं** = बहुत प्रकार से। **विसर्जयामास** = विसर्जित कर दिया।

अभ्यास प्रश्न

1. 'उद्भिज्ज-परिषद्' पाठ का सारांश हिन्दी में लिखिए। **(2020 MR)**
2. निम्नलिखित गद्यावतरणों का ससंदर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) सर्वासु ..... प्रयोजनकम्।

(ख) स्वार्थसिद्धये ..... आकाङ्क्षन्ति।

(ग) स्वावस्थायां ..... परपीडनात्।

(घ) स्वावस्थायां ..... अन्यभिलषति।

अथवा स्वावस्थायां ..... स्वल्पमात्रं शान्तिसुखम्?

(ङ) न केवलमेते पशुभ्यो ..... क्रान्तमेव।

अथवा न केवलमेते पशुभ्यो ..... प्रकटयति।

(च) मनुष्याणां ..... उल्लङ्घयति।

अथवा मनुष्याणां ..... विदीर्यते हृदयम्। **(2019AO)**

(छ) मनुष्याः पुनः ..... प्रकटयति।

(ज) तृणानि खलु वात्यया .... मनोरथपथादपि क्रान्तमेव।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए–

(क) मनुष्यों के प्रति वट-वृक्ष की क्या सोच है?

(ख) "पेड़-पौधों के प्रति मानव-जाति की क्रूरता अथवा निष्ठुरता स्वयं उसी के लिए हानिप्रद है।" इस कथन का औचित्य सिद्ध कीजिए।

(ग) उद्भिज्ज परिषद् के आधार पर वृक्षों के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

(घ) मनुष्यों एवं पशुओं के हिंसा कर्म का क्या प्रयोजन है?

(ङ) भोजन के विषय में पशु-पक्षियों का क्या नियम है?

(च) इस पाठ में मनुष्य के सन्दर्भ में क्या कहा गया है?

(छ) हिंसक पशु और लालची पुरुष में क्या अन्तर है?

(ज) 'उद्भिज्ज परिषद्' का अध्यक्ष कौन है और उसके भाषण तथा सार क्या हैं?

(झ) वृक्षों की सभा में सभापति कौन था?

(ञ) मनुष्य पशुओं से निकृष्ट क्यों है?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए–

(क) उद्भिज्ज परिषद् पाठे किम् वर्णितम्?

(ख) उद्भिज्ज परिषद् पाठस्य आधारे मनुष्याणां वृत्तिः कीदृशी अस्ति?

5. सर्वासु, मनुष्याणां, क्षणमपि, पतन्ति एवं तृणानि पदों के मूल रूप निर्दिष्ट करते हुए उनमें हुए परिवर्तन का कारण बताइए।

6. निम्नलिखित शब्दों को संस्कृत के वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

अस्माकं, परिभ्रमन्ति, तृणानि, तावत्, तत्रैव।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

1. आपकी दृष्टि में वृक्षों की हमारे जीवन में क्या उपयोगिता है?
2. वृक्षों पर एक पोस्टर तैयार कीजिए।